कक्षा-10

विषय-हिन्दी

रचनात्मक आकलन

गद्य और पद्य की विषय वस्तु, भाषा, शैली में बहुत अंतर है। गद्य साहित्य की विषय वस्तु प्रायः हमारी बोधवृत्ति पर आधारित होती है और काव्य की संवेदनशीलता पर। गद्य मस्तिष्क के तर्क प्रधान चिंतन की उपज है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि गद्य का संसार वास्तविक है किंतु काव्य बहुत कुछ काल्पनिक है। इस प्रकार गद्य और काव्य विषय, भाषा, प्रस्तुतिशिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप है। दोनों दृष्टिकोण एवं प्रयोजन में भी भिन्न होते हैं। अतः विद्यार्थियों में निम्नलिखित कौशल/दक्षता का विकास करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

- विषय से संबंधित जानकारी।
- चिंतन, मनन, आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- तार्किक क्षमता एवं भाषायी प्रवाह एवं दक्षता।
- अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण(लय, तुक , भाषा)।
- कल्पना की नवीनता, मानवीयता एवं संवेदनशीलता।
- विचारों की सुसंबद्धता।
- सौंदर्य बोध उत्पन्न करना।
- वाचन (आरोह, अवरोह) एवं लेखन कौशल का विकास।
- सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को विकसित करना।
- अभिनय क्षमता का विकास एवं उपयुक्त संवाद योजना।
- शब्द भंडार एवं अनुप्रयोग।
- चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का विकास।

गतिविधियों को पूरे सत्र में कक्षा शिक्षण के साथ जोड़ना

	गतिविधियाँ	पाठ
गद्य खण्ड	वाद-विवाद/समूह चर्चा, व्याख्यान, संक्षिप्त लेखन, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता, सुन्दर लेखन,	भारतीय संस्कृति, मित्रता, ममता, क्या लिखूँ, ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से, अजन्ता, पानी में चंदा और चाँद पर

	सद् विचार, शब्द-अर्थ एवं प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखवाना।	आदमी।
पद्य खण्ड	सस्वर वाचन, कविता लेखन, कविता वाचन, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता सद् विचार, शब्द-अर्थ एवं प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखवाना। वाद विवाद/समूह चर्चा।	पद, धनुष भंग, वन पथ पर, सवैये, कवित्त, भक्ति, नीति, भारतमाता का मन्दिर यह, पुष्प की अभिलाषा, जवानी, चींटी, चन्द्रलोक में प्रथम बार, झाँसी की रानी की समाधि पर, हिमालय से, वर्षा सुन्दरी के प्रति, हल्दीघाटी, स्वदेश प्रेम, नदी, युवा जंगल, भाषा एक मात्र अनन्त है।
संस्कृत खण्ड	सस्वर वाचन, सुन्दर लेखन, सद् विचार, शब्द-अर्थ एवं प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखवाना, रोल प्ले एवं दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण, भाषण तैयार करना, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता।	भारतीया संस्कृतिः आरुणि श्वेतकेतुः संवादः, वाराणसी, वीरः वीरेण पूज्यते, देशभक्तः चन्द्रशेखरः, जीवन सूत्राणि, केन किं वर्धते, प्रबुद्धो ग्रामीणः, अनयोक्तिविलासः

<u>रचनात्मक आकलन</u>

रचनात्मक आकलन के उपकरण और तकनीक	**योगात्मक आकलन**
प्रश्नोत्तर विधि वस्तुनिष्ठ सार लघु उत्तर साक्षात्कार समय-सारिणी आकलन पैमाना उपाख्यान विधि परीक्षण प्रश्नमंच(क्विज) और प्रतियोगिता वाद विवाद व्याख्यान विधि समूह चर्चा	वस्तुनिष्ठ प्रश्न लघुत्तरीय प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

शैक्षिक भ्रमण सांस्कृतिक कार्यक्रम दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण	

<u>रचनात्मक आकलन के बिंदु</u>

1. शुद्ध वाचन शैली 2. शुद्ध लेखन 3. विषय ज्ञान 4. धैर्यपूर्वक सुनना 5. प्रस्तुतीकरण(लय,आरोह,अवरोह) 6. शब्द भंडार	7. मौलिक कल्पना 8. आत्मविश्वास 9. शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना 10. भाषा की प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता

उपरोक्त आकलन बिंदुओं के अतिरिक्त शिक्षक अपने विवेक से अन्य बिंदु निर्धारित कर सकता है।

<u>रचनात्मक आकलन का अभिलेख तैयार करना-</u>

उदाहरण -

प्रकरण - वाद-विवाद प्रतियोगिता

कौशल - विषय-वस्तु, प्रस्तुतीकरण, भाषा-शैली एवं आत्म विश्वास

क्र0सं0	छात्र का नाम	प्राप्तांक	अभियुक्ति
1	अ	9	सभी कौशल विद्यमान
2	ब	5	विषय-वस्तु अपूर्ण
3	स	8	कमजोर भाषा शैली
4	द	4	आत्मविश्वास की कमी भाषा-शैली एवं प्रस्तुतीकरण कमजोर

आकलन की प्रक्रिया में निम्नलिखित बातों को न करने की सावधानी रखने की आवश्यकता है।

1. छात्रों को धीमा, कमजोर, बुद्धिमान आदि श्रेणी में बांटना।

2. उनके बीच तुलना करना।
3. नकारात्मक वक्तव्य देना।

<u>विद्यार्थियों का प्रोत्साहन-</u>

- विद्यार्थियों के प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व विकास हेतु समय-समय पर छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया जाय।
- प्रमाणपत्र प्रदान किया जाय।
- प्रभावशाली प्रस्तुति को प्रोत्साहन/ सराहना किया जाय।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव।
- अच्छी प्रस्तुतियों का विद्यालय मंच पर प्रदर्शन।
- कविता को कक्षा के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जाय।
- छात्रों को स्वयं तथा अन्य विद्यार्थियों के आकलन हेतु प्रेरित किया जाय।
- औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाय।